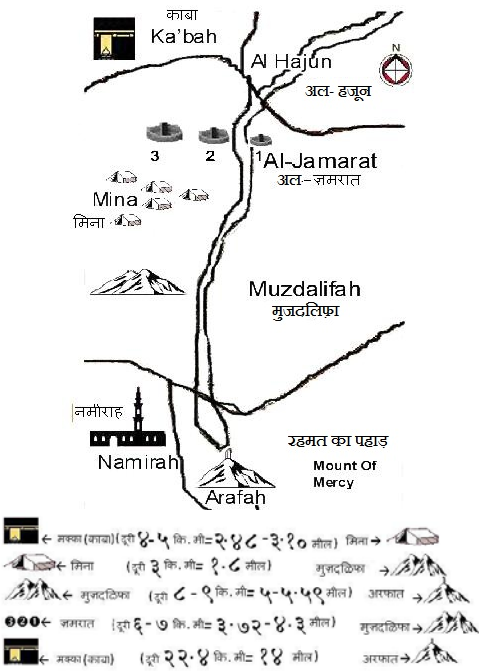


हिन्दी Hindi هندی

हज व उमराह का जामे मुख्तसर तरीका

मक्का मुकररमाह मे दाखिल होनेपर	उमराह(या तवाफकुदुम)
8 जील हिज्जाह	एहराम बांधले मिना मे ठहरे
9 जील हिज्जाह	वुकुफ अरफात (बाद मगरिब)मुझदलिफा
10 जील हिज्जाह	बडे शैतान को कंकरी मारना कुरबानी करना हलक करना तवाफे इफाजह (झियारत)
1, 12, 13 जील हिज्जाह	मिना मे ठहरकर शैतानो को कंकरी मारे।
मक्का से वापसी के वक्त	तवाफुल वीदा



उमराह (तवाफुल कुदुम)

मीकात पहुंच कर एहराम बांधले । उमराह की दुआ

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ بَعْرَةَ

"लबबइक अल्लाहुम्म बी उमराह"

"ए अल्लाह मैं हाजिर हूँ उमराह के साथ ।"

अगर उमराह पूरा न करने का खोफ है तो ये दुआ पढ़े -

اللَّهُمَّ مَحَلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِيْ

"अल्लाहुम्म महिल्ली हैसु हबस्तनी"

"एय अल्लाह (अगर मुझे किसीने उमराह करने से रोक दिया)मेरा ठिकाना वही है जहाँ आपने मुकरर कर दिया है।"

किबला रूख होकर ये दुआ पढ़े -

اللَّهُمَّ هَذِهِ عُمْرَةٌ لِيَّ رِيَاءَ فِيْهَا وَلَا شُرَيْكَ لِيَّ

"अल्लाहुम्म हाजीही उमराह ला रिया अ फीहा व ला सुमअः"

"एय अल्लाह ये उमराह है, जिस मे कोई दिखलावा नहीं है, और न कोई शोहरत है।"

आवाज से तलबीया पढ़े ।(औरतें आहिस्ता पढ़े) -

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلِّمْ

"लबबैक अल्लाहुम्म लबबैक, लबबैक ला शरीक लक लबबैक, इन्नल हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक ।"

"एय अल्लाह मैं हाजिर हूँ आपका कोई शरीक नहीं है। मैं हाजिर हूँ बेशक तमाम तारीफ और तमाम नेअमते आप के लिए है और हकूमत सलतनत आपकी है आपका कोई शरीक नहीं है।"

मस्जिदे हराम में दाहने पाँव से दाखिल हो और ये दुआ पढ़े -

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلِّمْ
اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي الْبَابَ رَحْمَةً

"अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव व सल्लिमा, अल्लाहुम्म फ तहली अबवाव रहमतीक।"

"एय अल्लाह रहमत नाजिल फरमा मुहम्मद सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमपर ।अय अल्लाह मेरे लिए रहमत के दरवाजें खोल दें।"

मर्द अपना दाहिना कंधा खुला रहने दो, हजर-ए-असवद के सामने से

पहले इस तरह खड़े होके काबा अपने सामने हो और तवाफ कि नियत करें -अय अल्लाह मैं आपकी रजा के लिए तवाफ करता हूँ आप उसको मेरे लिए आसान कर दीजिये और कबूल कर लीजिये और काली पट्टी पर किब्ला रूख खड़े हो कर चक्कर शुरू करने से पहले हजर असवद की तरफ दाहिनी हथेली करके कहे -

اللَّهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहू अकबर" ("अल्लाह सबसे बड़ा है")

और दोनों हाथ छोड़कर तवाफ शुरू करें। हर जगह शुरू करने से पहले हजर ए असवद की तरफ दाहिनी हथेली करें। अल्लाहू अकबर कहें उसको इसतिलाक कहते हैं। पहले तीन चक्करों में मर्द रमल करें। आहिस्ता- आहिस्ता दोड़ने को रमल कहते हैं। हर चक्कर में रुकने-यमानी और हजर-ए-असवद के दरमियान ये दुआ पढ़े -

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

"रब्बना-आतिना फिद -दुनिया हसनतव व फिल आखिरती हसनतव वकिना अजाबन्नार ।"

"अय हमारे रब हमे दुनिया में खूबी दें। और आखिरत में खूबी दें और दोजख के अजाब से बचा ।"

तवाफ के खतम होने पर अपना सीधा कंधा टांक लें और मकामे ईब्राहीम के पीछे जाकर यह दुआ पढ़े -

وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلِّينَ

"वतखिज् मिम्मकामी इब्राहीम मुसल्ला"

"कह दिया के इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ की जगह बनाओ"

मकामे ईब्राहीम के पास तवाफ की दो रकात नमाजे नफल अदा करें।

वरना कही भी हरमशरीफ में अदा करें। पहली रकात में कुल या-अय्युहल काफिरून और दूसरी रकात में कुलहुवल्लाहु अहद पढ़े। फिर झमझम के कुएँ के पास जाकर पेट भरकर झमझम पीएँ। और फिर सई करें। सई-सफा से शुरू करें और सई के एक चक्कर की मसाफत आधा किलोमिटर हैं। और कुल मिलाकर सात चकर होते हैं।यानि साडे तीन किलोमिटर।

अल - मस्जिद अल - हराम (मक्का) अल - फतह दरवाजा Marwah मरवा

1. तवाफ शुरू करना (हजुरल-असवध)
2. यमनी कोना
3. मकमे इब्राहीम
4. क्षेत्र तजी से चयना



رَايَا فَهْدٍ دَرِيْعًا
رَايَا عَبْدُ اللهِ اَنْبِيَا
رَايَا سَفَا
رَايَا مَرْوَا
رَايَا اَلْفَاثِ
رَايَا اَلْمَسْجِدِ
رَايَا اَلْحَرَامِ
رَايَا اَلْمَكَّةِ

"ईन्नस सफा वल मरवत मोन शआईरिललाह। फमन हज्जल बयत अवि अ त-म-र फला जुनाह अलयहि अय्यत तव्वफ ।बिहिमा वमन ततव्वअ खयरन फईन्नललाह शाकिरून अलीमा।"

"बेशक सफा और मरवा अल्लाह की निशानीयों में से है। सो जो कोई बयतुल्लाह का हज या उमराह करे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। के उन दोनों का तवाफ करे ।और जो कोई अपनी खुशी से कुछ नेकी करे तो अल्लाह यकीनन कदरदान और सब कुछ जाननेवाला है ।"

सफा और मरवाह पर हर वक्त काबे की तरफ मुहँ करके ये दुआ पढ़े -

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَيَاةُ يُحْيِي وَ يُمِيتُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَمْ يَجَزْ وَ عُدَّةٌ وَ نَصْرٌ عِنْدَهُ وَ هَزَمَ الْأَحْزَابَ وَ حَذَهُ

"अल्लाहु-अकबर । अल्लाहु-अकबर । अल्लाहु-अकबर । लाई ला ह ईल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु,लहूल मुल्कू वहलहुल हम्दु युहयी व युमीतु वहुव अला कुल्ली शयईन कदीर । लाई ला ह ईल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु अन्जझ वदहदु व न-सर अबदहु व हझमल अहझाब वहदहु।"

"अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं। वो अकेला है।उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिए बादशाहत है। और उसी के लिए तारीफ है।वो जिन्दाह करता है और मौत देता है। उसी के हाथ में तमाम भलाई है। और वो हर चीज पर कादिर है। अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं। वो अकेला है।उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपने वादे को पूरा किया।और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा एक लश्कर या गिशेह को शिकस्त दे दिया।"

उस को तीन मरतबा पढना है।और सिर्फ पहले और दूसरे मरतबा पढने के बाद दुआ करें। सफा से मरवा(एक चक्कर)और मरवा से सफा(दूसरा चक्कर) उस तरीके से सात चक्कर लगाने हैं।और मरवा पर चक्कर खत्म होगा। जब हरी बत्ती के पास जाएँगे तो मर्द हजरात दौड़े ।और औरत न दौड़े और ये दुआ करें।

अस-सफा से लेकर अल-मरवा और अल-मरवा से लेकर अस-सफा के दरमियाँ यह दुआ पढ़ना जाइज़ है

رَبِّ اغْفِرْ وَاِرْحَمْ، إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

"रब्बीग फिर वरहम इन्न-क-अंतल अ अज़्जुल अकरम ।"

"अय मेरे रब मेरी मगफ़ेरत फरमा और मुजपर रहम कर तू सबसे ज़्यादा अझमत वाला और करम करने वाला है।"

मस्जिद से निकलते वक्त बाया पाव निकाले और ये दुआ पढ़े -

بِسْمِ اللَّهِ صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

" अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदीऊ व सल्लिम, अल्लाहुम्म इन्नी अस अलुक मिन फज़लिक ।"

"अय अल्लाह रहमत नाज़िल फर्मा मुहम्मद (स.अ.व)पर अय अल्लाह मैं तुजसे तेरे फज़ल का सवाल करता हूँ।"

फिर आदमी लोग पूरे सर के बाल मुंडाए। या कम से कम पूरे सर के बाल हर जगह से बराबर काटें और औरतें सारे सर के बाल उंगली के एक पोरे की लम्बाई से कुछ ज़्यादा काटें। अब आपका एहराम खुल गया और तमाम पाबदिया खत्म हो गई।

आठ झील हिज्जाह

आठ झील हिज्जाह को मिना फजर के बाद जोहर से पहले पहुँचो एहराम की हालत मे पहुँचो हज की नियत से एहराम मे दाखिल होवे(जहाँसे ठहरे हो वहाँसे) -

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ بِحَجٍّ

"लबबैक अल्लाहुम्म बि हज्ज"

"अय अल्लाह मैं हज के लिए हाजिर हूँ।"

अगर हज पूरा न करने का डर हो तो पढ़े -

اللَّهُمَّ مَحَلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِيْ

"अल्लाहुम्म महल्ली हैसु हबस्तनी ।"

"अय अल्लाह (अगर मुझे किसीने हज करने से रोक दिया) मेरा

ठिकाना वही है जहाँ आपने मुकर्रर कर दिया है।"

किब्ला रुख खड़े हो कर ये दुआ पढ़ें -

اللَّهُمَّ هَذِهِ حَجَّةٌ لِي رِيَاءٌ فِيهَا وَلَا سُمْعَةً

"अल्लाहुम्म हाज़िही हज्जतुन ला रिया अ फीहा वला सुमअह।"

"अय अल्लाह ये हज है, जिस में कोई दिखलावा नहीं है, और न कोई शोहरत है।"

तलबिया बा आवाज़ बुलंद पढ़ें -

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ،
إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल

हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक।"

इसका तर्जुमा पहले से ही मौजूद है।

और यह तलबिया भी पढ़ें -

لَبَّيْكَ إِلَهَ الْحَقِّ

"लब्बैक ईलाहल हक्की।"

"मैं हाज़िर हूँ अल्लाह के सामने जो सच्चाईवाला है।"

मीना में क़याम

मीना की तरफ को जाए। जोहर, असर, ईशा (कसर पढ़ें) फ़जर, मगरिब

सब अपने अपने वक़्त पर पढ़ें अलग अलग पढ़ें।

नौ जिल हिज्जाह अरफा का दिन

झवाल से गुरुबे आफ़ताब तक अरफ़ात में ठहरने को वुकुफ़े अरफा कहते हैं। और ये फ़ज़्र है। फ़जर की नमाज़ पढ़ने के बाद इशराक के बाद अरफ़ात की तरफ चले और ये तस्बीहात पढ़ें -

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ،
إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

"लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्ननिअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक।"

इसका तर्जुमा पहले से ही मौजूद है।

और अल्लाह की बड़ाई भी बयान करें -

اللَّهُ أَكْبَرُ

"अल्लाह अकबर" ("अल्लाह सबसे बड़ा है")

फिर अरफ़ात में झवाल से पहले पहुँचें। अगर मस्जिद नमीरा में कही जगह न मिले तो अरफ़ात में किसी भी जगह कयाम करें। अगर मस्जिदे नमीरा में जगह मिल जाये तो एक अजान और दो इकामत के साथ जोहर और असर की नमाज़ एक साथ अदा करें (कसर) और दोनों नमाज़ों के दरम्यान कोई नमाज़ न पढ़ें इसी तरीके से असर के बाद भी कोई नमाज़ न पढ़ें और अगर मस्जिदे नमीरा में जगह न मिले तो दो अजान और दो इकामत के साथ नमाज़ अपने अपने वक़्त पर पढ़ें। जवाल होते ही वुकुफ़े शुरू करें। और शाम तक लब्बैक कहे खूब दुआ और तौबा व इस्तीग़फ़ार करने और चोथा कालिमा पढ़ने गिड़ गिड़ा के दुआ माँगने में वक़्त गुज़ारें। और वुकुफ़े खड़े होकर करना अफ़ज़ल है। और बैठ कर करना जाइज़ है। किब्ले की तरफ मुँह करके हाथ उठा कर ये तलबिया पढ़ें।

इस दिन की सबसे अफ़ज़ल तस्बीह -

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ،
وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

"ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीकलहू, लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु युहयी व युमीतु बी यदिहिल खयर वहु अला कुल्ली शयईन कदीर।"

"अल्लाह के सीवा कोई मअबूद नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं। उसीके लिये बादशाहत है। और उसी के लिये तारीफ़ है। वह जिन्दा करता है और मौत देता है। उसी के हाथ में तमाम भलाई है। और वह हर चीज़ पर कादिर है।"

फिर गुरुबे आफ़ताब के बाद तक वहाँ रुके। लेकिन मगरिब की नमाज़ वहाँ अदा न करें। और मुझदलिफा की तरफ चले।

वुकुफ़े मुझदलिफा



मुझदलिफा पहुंचने पर एक अजान और दो इकामत के साथ मगरिब और ईशा की नमाज़ें कसर पढ़ें। दोनों नमाज़ों के दरम्यान कोई नमाज़ न पढ़ें। फिर ईशा की फ़रज़ नमाज़ के बाद मगरिब की दो सुन्नत और ईशा की सुन्नत और वित्र पढ़ें। दुआओ और ज़िक्र का खूब एहेतेमाम करें। फिर कंकरीयाँ चुने बड़े चने के बराबर 70 (सत्तर) कंकरीयाँ हर आदमी के लिये चुने

दस जील हिज्जाह

फिर सुबह उठकर फ़जर की नमाज़ पढ़ें और कीब्ले की तरफ मुँह करते हुए अल्लाह की हम्द करें। -

الْحَمْدُ لِلَّهِ

"अलहम्दु लिल्लाह" - "तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है।"

اللَّهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहु अकबर" - "अल्लाह सबसे बड़ा है।"

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

"ला ईलाह इल्लल्लाहु"

"नहीं कोई मअबूद सिवाय अल्लाह के।"

फिर सूरज निकलने से पहले मीना की तरफ ये तलबिया पढ़ते हुए चले।

बड़े शैतान को कंकरी मारना

मुझदलिफा या मीना पहुंच कर जमरतुल उकबा पर सात कंकरीया अलग अलग मारे (जान के ख़तरे के पैसे नज़र शाम को या रात में कंकरीया मारना मुनासिब है।) कंकरी मारते हुए ये तस्बीहात पढ़ें -

اللَّهُ أَكْبَرُ

"अल्लाहु अकबर" - "अल्लाह सबसे बड़ा है।"

शैतान को कंकरी मारते ही लब्बैक कहना बन्द कर दें और रमी के बाद दुआ के लिए न ठहरे। अपने ठिकाने पर चले जाएं। उस के बाद कुरबानी करें।

कुरबानी

कुरबानी के लिए टिकट खरीदना भी जाइज़ है। अगर टिकट न लिया तो कुरबान गाह की तरफ चले। कुरबानी करते वक़्त ये पढ़ें -

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا مِنْكَ وَكَانَ اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي

"बिस्मिल्लाही वल्लाहु अकबर अल्लाहुम्म ईन्नल हाज़ा मीक वलक अल्लाहुम्म तकबल मीन्नी"

"अल्लाह के नामसे शुरू करता हूँ वो सबसे बड़ा है। अय अल्लाह ये तेरे ही तरफ से है और तेरी ही मिल्कियत है अय अल्लाह तु मुझसे ईस को कुबुल कर।"

सर के बाल मुंडवाले

कुरबानी हो जाने के बाद सर के बाल मुंडवाले फीर आदमी लोग पुरे सरके बाल मुंडवाए या नहीं तो पुरे सर के बाल हर जगह से बराबर बराबर काँटे और औरते आप बाल उंगली के एक पोरों की लम्बाई से कुछ ज्यादा कतरे अब आपका ऐहराम खुल गया और तमाम पाबंदीया खत्म हो गई। सिवाय हमबिस्तरी के। फिर मक्के की तरफ तवाफ़े ज़ियारत के लिए चले।

तवाफ़े ज़ियारत

अब तवाफ़े ज़ियारत करें। उस का वक़्त दस से बारह जिल हिज्जाह के आफ़ताब गुरुब होने तक। दिन में या रात में जब चाहे करें। उमुमन ग्यारह जिल हिज्जाह को आसानी होती है। (तवाफ़े ज़ियारत का तरीका वही है जो उमराह के तवाफ़े का है) और तवाफ़े वुज़ के साथ ही होना चाहिए। ईस के लिए ऐहराम की जरूरत नहीं है। मस्जिदे हराम में दाहने पाव से दाखल हो और ये दुआ पढ़ें -

"अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदी व

सल्लिम अल्लाहुम्मफतहली अबवाब व रहमतिका।"

इस के बाद तवाफ़े करें और तवाफ़े का तरीका पेज नंबर 1 गुज़र चुका है।

नोट: फिर तवाफ़े के ख़त्म होने पर मकामे इब्राहीम के पास जाकर तवाफ़े की दो रकात नफील अदा करें। फिर सफा और मरवा के दरमियाँ सई करें। सई का तरीका पेज नंबर 1 पर गुज़र चुका है। अब आपका ऐहराम खुल गया और तमाम पाबंदीया खत्म हो गई। अब आप हम बिस्तरी भी कर सकते हैं मस्जिद से निकलते वक़्त बाया पाव निकालें और ये दुआ पढ़ें

"अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदी व सल्लीम अल्लाहुम्म इन्नी अस अलुक मीन फज़लिक।"

इस का तर्जुमा एक नंबर पेज पर दुआ पर देखें।

11 और 12 झील हिज्जाह

मीना में ठहरकर शैतानों को कंकरी मारना



जवाल के बाद से लेकर रात तक तीनों शैतानों को कंकरीया मारनी है। पहले छोटे शैतान को कंकरी मारते वक़्त -

"अल्लाहु अकबर" ("अल्लाह सबसे बड़ा है")

यह तस्बीह पढ़ें। फिर किब्ले की तरफ मुँह करके दुआ करें। फिर दूसरे शैतान की तरफ इसी तरीके से तस्बीह पढ़ते हुये कंकरीया मारे। इसी तरह काबे की तरफ मुँह करके दुआ करें। -

"अल्लाहु अकबर" ("अल्लाह सबसे बड़ा है")

अब दुआ के बाद तीसरे शैतान को तस्बीह पढ़ते हुये कंकरीया मारे -

"अल्लाहु अकबर" ("अल्लाह सबसे बड़ा है")

अब दुआ न करें। अब आपको इखतीयार है के बारवी जिल हिज्जाह की सुबह के बाद सूरज गुरुब के पहले मीना छोड़ दें। या तेरवी की रमी करके ही मीना छोड़ें

तवाफ़े विदाअ

हज के बाद जब मक्के में से वतन वापसी का इरादा हो तो तवाफ़े विदाअ वाजीब है। मस्जिद हराम में दाहने पाव से दाखिल हो और तवाफ़े विदाअ करें। तवाफ़े का तरीका पेज नंबर 1 पर गुज़र चुका है। तवाफ़े विदाअ ख़त्म करें और मकामे इब्राहीम के पास तवाफ़े की दो रकात नमाज़ें नफ़ल अदा करें। वर्ना हरम शरीफ़में कही भी अदा करें। अब आपके हज के अरकान तमाम मुक़म्मल हो गए। अब आप अपने वतन के लिए रवाना हो सकते हैं। मस्जिद से निकलते वक़्त बाया पाव निकालें और ये दुआ पढ़ें -

"अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदीन व सल्लीम अल्लाहुम्म इन्नी असलोक मीनफज़लीक।"

"अय अल्लाह रहमत नाज़िल फरमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयही व सल्लम पर अय अल्लाह मैं तेरे फ़ज़ल का सवाल करता हूँ।"

हज के सफ़र में जाने से पहले सारे कर्ज़ अदा कर दें। बंदों के हुक़ अदा कर ले या माफ़ करा ले। और वसीयत लिख दें।

ज्यादा कापी के लिए संपर्क करें:

The Islamic Bulletin, PO Box 410186, San Francisco, CA 94141-0186
USA ♦ E-Mail: info@islamicbulletin.org
www.islamicbulletin.org (Enter Here ♦ Hajj ♦ Hindi)